पिघलती बर्फ़

(ग़ज़ल-संग्रह)

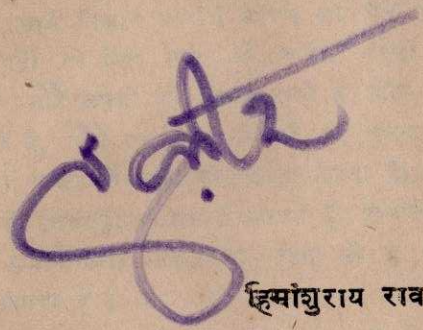

हिमांशुराय रावल 'हक़ीर'

त्रिपाठी एण्ड संस

अहमदाबाद

सर्वाधिकार : हिमांशुराय रावल 'हक़ीर'
प्रकाशक : त्रिपाठी एण्ड संस ३९६ भोईवाड़ा की पोल कालूपुर अहमदाबाद-३८०००१ मुद्रक : रचना प्रिन्टिंग प्रेस शान्ता मेन्शन मिरजापुर अहमदाबाद-१ प्रथम संस्करण १९८१ मुल्य १२.००

Pighaltee Barf By Himansuray Raval 'Haqeer' 12.00

रुपया आना पाई और शायरी

रावल साहब एक नौजवान लेखक हैं और बैंक में मुलाज़िम हैं। मैंने उनकी नज़्मों की पहली किताब 'पिघलती बर्फ़' से पहचाना है। मुझे जब उनकी किताब पढ़ने का मौक़ा मिला तो मैं बड़ी देर तक सोचता रहा कि बैंक की मुलाज़िमत ने रावल की शायरी पर क्या असर डाला, क्या मुलाज़िमत की वजह से उनकी शायरी को नुक़सान पहुंचा या उसमें निखार आया। लेकिन जब मैंने उनकी कुछ नज़्में बार-बार पढ़ीं तो ऐसा लगा कि रावल लफ़्ज़ों को इस तरह परखते हैं, खोटे लफ़्ज़ों को अलग रखते हैं और खरे लफ़्ज़ों को चुनते जाते हैं, जैसे एक बैंकर सिक्कों को चुनता है—एक बैंकर सिक्कों को परखने में बहुत कम ग़लती करता है। रावल लफ़्ज़ों के इस्तेमाल में उतनी ही होशियारी बरतते हैं, हालांकि इन नज़्मों में कहीं-कहीं ज़बान और उरूज़ का नुक़्स भी है, लेकिन ख़ूबियां नुक़्स से ज़्यादा हैं।

अगर रावल रुपया आना पाई के चक्कर से किसी हद तक अपने को निकाल सकें और शायरी करते रहें, तो मुझे उम्मीद है कि एक दिन उनके अंदर से छुपा हुआ शायर बाहर निकल आएगा, तब, रावल बैंकर की हैसियत से नहीं, शायर की हैसियत से पहचाने जाएंगे। तब मैं भी इनके बैंक में अपने थोड़े-से रुपये जमा कर दूंगा। इसी बहाने उनसे मिलता रहूंगा और उनके शेर सुनता रहूंगा।

बम्बई

कैफ़ी आज़मी

नाम इनका हिमांशुराय रावल है, तख़ल्लुस 'हक़ीर' फ़र्माते हैं। इनकी किताब 'पिघलती बर्फ़' जो अभी शाए हुई है; मैंने इनकी किताब पढ़ी—और कई बार पढ़ी। इनके कलाम में जज़्बात और एहसासात मौजूद हैं। शायरी ख़ुदा की देन है। शायर पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते। बड़ा से बड़ा पढ़ा-लिखा, शे'र नहीं कह सकता, और एक मामूली इन्सान, जो कुछ भी न पढ़ा हो, शे'र कह सकता है। हिन्दी का मक़ूला है—'जहां न जाए रवि, वहां जाए कवि।'

शे'र कहते हुए इन्हें पाँच-छः बरस हुए हैं, अभी नौमश्क़ हैं। शायरी के लिए उम्र चाहिए। शायर जितना बूढ़ा हो जाता है, उसके शे'र में, उसकी शायरी में निखार आता जाता है। लिहाज़ा मेरी राय है कि 'हक़ीर' साहब ज़्यादा से ज़्यादा शे'र कहते रहें—निखार आता चला जायेगा। पढ़नेवाले ख़ुद ही अंदाज़ा लगा लें कि हक़ीर साहब ने पाँच छह बरस में अपना कलाम किस उमदा तरीक़े से कहा है। मुझे उम्मीद है कि ये आगे चलकर एक बहुत उमदा शायर साबित होंगे।

बम्बई
८ सित. '८१

हसरत जयपुरी

'पिघलती बर्फ़' मैं देख गया हूं। कुछ ग़ज़लें हैं कुछ गीत हैं। भाषा पर आपको पर्याप्त अधिकार है। प्रायः ऐसा होता है कि नए कवि में भावों की तो तीव्रता होती है, पर भाषा उसकी कमजोर होती है। यहां कुछ उल्टा होता है। भाव कुछेक कमजोर हैं, पर भाषा आपकी परिपक्व-सी लगती है। अभी आपको अपने अनुभवों की भाषा मढ़नी है।

आपमें सम्भावनाएं मैं बहुत देखता हूं पर साधना भी पर्याप्त करनी होगी।

बम्बई
15 अगस्त '81

हरिवंशराय बच्चन

X——X——X

जवां साल और होनहार शायर श्री हिमांशुराय रावल के गीत रेडियो और टेलीविज़न पर मशहूर गायकों ने गाए हैं और इस प्रकार उन्हें अवाम में मक़बूलियत हासिल हुई है। 'हक़ीर' एक पुरख़ुलूस, बे-लौस, तहज़ीब-याफ़्ता नौजवान हैं और एक बहुत दिलकश शख़्सीयत के मालिक। उनके मजमूआ-ए-कलाम का इन्तख़ाब मेरे सामने है, आपकी शायरी में रिवायत के एहतराम की झलक है और उसके साथ ही सेहत-मंद तजरबात का हौसला भी। कलाम में सादगी, इज़हार में बेसाख़्तगी और जज़्बात में रवानी हर जगह नज़र आती है। मुझे उम्मीद है कि उनके रेडियो और टेलीविजन पर गाए गये गीतों की तरह अवाम उनके मजमूआ-ए-कलाम को भी पसन्द करेंगे।

कैलाश चन्द्र 'नाज़'

दुनिया के आंगन में फूल खिलते रहे हैं । मौसमों से आंख-मिचौली खेलती बहार, जब अपने आपको मनवाने पर तुल जाती है, तो सावन के अंधे भी अपने मन की आंखें खोलने पर मजबूर हो जाते हैं। मैंने अक्षरों के क़दमों की आहट और महबूबा के पायलों की झंकार में बड़ी प्यारी समानता पाई है ! यही कारण है के बहारों को आंगन में समेटकर जब कोई अपनी उभंगों में बसा लेता है तो शायर कहलाता है ।

"स्कायलेब" के ज़माने में वक़्त हाथ नहीं लगता। फूलों को लोग 'अपने नाम' देकर नुमाइशों में रख देते हैं । ज़िंदगी की दौड़-भाग वक़्त को कुचलती रहती है । इन सब की परवाह न करते हुए, सहमे-सहमे ज़ख्मी पलों को सीने से लगा लेना, उस प्यार की दलील है जो खरी शायरी का तक़ाज़ा है । जरूरत सिर्फ़ इस बात की है के हम दुनिया के सुलूक को सहते समय इतने न उमड़ें के जज़बात काग़ज़ की नाव की तरह तैरते रह जाएं ।

'हक़ीर' ने अपनी मसरूफ़ियत से जो भी पल छीने हैं, उन्हें अपना हक़ समझकर अपनी रचनाओं में पिरो लिया है । उनकी शायरी मौजूदा नस्ल का प्रतिनिधित्व करती है । उसमें 'आज के नौजवान' के मन की तरंगे और वह इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हैं जो वक़्त के बादल छटने के बाद दिखलाई देते हैं ।

शायरी के पुराने व नए ढंगों को दो रंगी दुनिया की तरह उन्होंने बड़ी सादगी से अपना लिया है। "हक़ीर"–इस तख़ल्लुस की तरह उनकी शायरी में भी इन्केसार हैं । उनकी शायरी और शख़्सीयत दोनों मुझे अज़ीज़ हैं और मेरी आरज़ू है के उनकी 'मोर पंखी रचनाएं' संसार को, आंगन में बहार आने की ख़बर करती रहें ।

तमकीन-उर-रहमान

समर्पण

जगद्गुरु

श्री जगन्नाथ

तीर्थ स्वामीजी,

जगदीश आश्रम, लिंबडी के

श्री चरणों में सादर समर्पित

नम्र निवेदन

कहते हैं; अतीत की याद और भविष्य के सुनहले सपनों के मधुबन में खो जाने के बाद कविता लिखी जाती है। लेकिन मेरा न कोई रंगीन अतीत है, न कोई सुगठित सपना; फिर भी, मैं लिखने की कोशिश करता रहता हूं। अपने परिचित मित्रों के लाख सिर धुनने पर भी उन्हें सुनाता रहता हूं। कविता की पंक्तियों के खत्म होने से पहले ही उनके श्रीमुख से घड़ल्ले से "वाह वाह" निकलनी शुरु हो जाती है, मुझसे पिंड छुड़ाने की उन की तीव्र उत्कंठा प्रकट हो जाने पर भी और भीतर किसी कोने में मुस्कुरा लेता हूं।

बचपन की, कहने लायक याद इतनी-सी है कि पड़ोस में एक वृध्ध की गम्भीर लेखन मुद्रा और सफ़ेद चमकते कागज़ पर लाल स्याही के उनकेसुंदर अक्षरों ने मुझे उनकी तरह बैठ कर लिखने के लिये ललचायाथा और तब से आज तक देवी सरस्वती के आँगन में जरूर साधना कर रहा हूं।

शैशवकाल से ही तुक मिलाने की कुछ आदत बन गई थी। मुझे छन्दों से, छन्द बद्ध या लय भरे वाक्यों से बेहद प्रेम है क्योंकि मूलतः मैं एक गायक हूं, शायद इसीलिये, छन्दहीन रचना, क्षमा करें, मुझे तो घर से निकाली बेवा-सी लगती है।

तारुण्य-प्रवेश कहो या मेरा बम्बई में आना कहो एक ही बात है यहां मैंने तक़रीबन एक साल तक जासूसी और बैताल कथाए जम कर पढ़ी। यहां थे एक साहब, नाम से 'श्रमिक' चौधरी, आपने सारा गुड़-गोधर कर दिया। अपनी प्यार भरी आवाज में आपने कुछ अपनी तथा औरों की रचनाओं का आस्वाद कराया और यूं प्रेरणास्त्रोत बने। मैं खुद को उनके एहसान तले हर्गिज नहीं मानता। भला भाई कभी भाई पर उपकार करता है? मुहब्बत में एहसान जैसी चीज अस्तीत्व नहीं रखती।

अपनी किंचित् कृतियां आप के सामने रखता हूं। मैं चाहता हूं मेरी रचनाए खुद बोलें। तो लिखता ही चला जा रहा हूं, चाहे जैसा भी; दीवारों से दिलदारों तक सुनाता चला जा रहा हूं। मेरी प्रत्येक रचना तुहिनशैल की एक हिमश्रृंग सी है जो बनती ही चली जायेगी—पिघलती ही चली जायेगी, गलती रहेगी-जमती ही चली जायेगी....निरंतर....अविलम्ब.... हमेशा.....हमेशा.....।

प्रभादेवी

क्रम

यारब कफूरे दर्दका बयान क्या करें	१
आज तूफ़ान में इक शम्अ-सी जला दी है	२
गुजरे हुए दिनों में सही प्यार ही	३
तुम भूलो हम याद करें	४
ग़ज़लों में ढला वो प्यार जले	५
तरसी हुई निगाह को	६
हम गरीबों का कोई	७
लगता है वक़्त बर्क़ की सूरत निकल गया	८
खिजां रसीद हैं काग़ज़ का प्यार ले आएं	९
न ऐसा दिल कभी आया न शब ऐसी कभी आई	१०
खुशी से दर-ब-दर की ठोकरें खाते हुए चलिये	११
नुमाइश है लगी ज़ख्मों की इस दिल में	१२
खुदा करे कि मेरी आरजू सताये तुझे	१३
फिर दूसरे जनम के लिए मुन्त-ज़िर हूं में	१४
दैरो हरम के नाम संगजार-सा मिला	१५
हर चंद दिल से खाम-खयाली नहीं गई	१६
जब कभी आग-सी लगनी है आशियाने में	१७
गुजरे जो संगतराश राहे-क़त्ल-गाह पर	१८
इलजाम दीजिये भी तो कस्ती के सर नहीं	१९
बहेते रहेंगे लाश की सूरत नदी के साथ	२०
किसी के पैर पर देखो जहां झनका है घुंघरु	२१
ए खुदा तेरी तमन्ना हम कभी करते नहीं	२२
जनाज़ा आज हम अपनी हिकारत का उठाएंगे	२३
तराजू तोलनेवाले तेरी क्या नागवारी है	२४
कभी दिल लगाकर लगन देखतेहैं	२५
हवाओं पे हमको भरोसा नहीं है	२६
मैं सोचता हूं ऐ दिल किसका खयाल लाऊँ	२७
जब भी हम वक़्त की गहराई से घबराते हैं	२८
न दिल के हैं न दुनिया के	२९
हस रहा हूं गो मेरी आदत ही नहीं	३०
आज इक आइनाखाने का ख्वाब देखा है	३१
मुझे वीरानियों के बीच ही रहना पड़ेगा	३२
हो गया ज़ख्म तो भरने की दुवा कहते हो	३३
बेवफ़ा इश्क की कुछ तो मियाद बढ़ जाए	३४
लगता है जिन्दगी की अब शाम हो गई है	३५

मेरे वीराने में कौन चला आया है ३६
कैसे बनेगी इस तरह तसवीर यार की ३७
हर लम्ह मुसब्बिर है तसवीर कार है ३८
कुछ यूं शबे-फुर्क़त में जिये जा रहा था मैं ३९
अपने ही दिल को कब तल छलता रहूंगा मैं ४०
जिन्दगी खुश्क से गालो पे सूख जाती है ४१
कई चहेरे हैं मेरे सामने पर सब पराये हैं ४२
अब वो ही बात कर जा मेरे दिल की बात हो ४३
महफ़िल से मेरी रौशनी लेकर वो चल दिये ४४
बेबात तेरे ख्वाब ने धोखा दिया मुझे ४५
ऐ मेरे ख्वाब हकीकत हो जा ४६
मेरे जुनूं दायरे से दूर है कोई ४७
जिन्दगी बीत गई बातों में ४८
सदियां हुई गाते हुए ४९
तेरे चमन से चला हूं मैं चश्मेतर लेकर ५०
भूला हुआ ख्वाब सजाया था ५१
जब दिले नादां हमें याद आयेगा ५२
ये उन बादलों की बस्ती है ५३
दर्द अब खुद ही चर गार हो गया है ५४
ये किस तरह से आज सहारों ने पुकारा ५५
कहा, अजान कभी नारसा नहीं होती ५६
मेरी कहानी कहती है ये पवन कबसे ५७
इक नज़र ही तो मिलानी है, चले जायेंगे ५८
बहुत-सा गम छुपा है देख तेरी दास्तां में ५९
शाम हो जाये तो बता देना ६०
मेरे गीत कोई तो गायेगा ६१
मन्दिर में दीपक का जलना ६२
कोई था जिसको पाया था ६३
मुझे मालूम था ६४
संध्या सागर तट पर छाई ६५
डूब गई नैया कागज की ६६
ऐ दोस्त मुझे मंजूर नहीं ६७
वो प्यार मुझे याद आया ६८
मुझसे वो प्यार नहीं करते ६९
मुझे याद अपना बचपन आया ७०
मुझे याद कोई करता होगा ७१
एक गीत अधूरा रहा मेरा ७२
हां तुम धीमे धीमे गाना ७३
एक दीप जला दीवाली है ७४
मैं आज हूं कल मर जाऊंगा ७५
मांझी क्या तेरा जीवन है ७६
चोट ७७
नज़में ७८
जाने वालों से ७९
पिघलती बर्फ़ ८०

या रब ! वफ़ूरे-दर्द, का बयान क्या करें ?
सुनता न हो कोई तो फिर जुबान क्या करें ?

उम्मीद थी जिधर से वही घर उजड़ गया
अब क्या करें ज़मीन, आसमान क्या करें ?

सूरत, जो ख्वाब में है वही, ढूंढ़ते हैं हम
चहेरों से ये भरा हुआ जहान क्या करें ?

नौहागरी के बाद भी हमको सुकूं कहां ?
पलकों के ये हसीन सायेबान क्या करें ?

हर शै पुकारती है, हमें देखकर, उन्हें;
उनके बिना 'हक़ीर' ये मकान क्या करें ?

आज तूफान में इक शम्अ–सी जला दी है
तेरी तस्वीर जो दीवार पर सजा दी है ।

यूं तो सौ साल से ज़्यादा न थी उमर मेरी,
इस तग़ाफ़ुल ने उमर यार की बढ़ा दी है ।

मैकदा क्या है देखे हैं चारागर लाखों
मैंने इस मर्ज की सौ रीत से दवा की है ।

पूछ तो डूबते महताब से क़सम देकर
मैंने हर गाम पे रुक कर तुझे सदा दी है

क्या मुझे कम थे ए 'हक़ीर' ज़ख्म दुश्मन के !
देखा यारों ने भी इक चोट–सी लगा दी है !!

गुज़रे हुए दिनों में सही, प्यार ही सही
गुलज़ार–सा लगे है तो गुलज़ार ही सही

मिटने से मिट सके तो भला क्या है आरज़ू
होना है क्या बहुत से बहुत दार ही सही

ठोकर मिली हैं आज तक इतनी कि क्या कहें !
दुश्मन नहीं हुआ तो कोई यार ही सही !

चंदा है बदगुमान–सा तारे हैं बेख़याल
चुप–चुप हैं आज वादियाँ बेकार ही सही

जबरन 'हक़ीर' पर हमें करना पड़ा यक़ीं
इनकार कर रहे हैं तो इनकार ही सही ।

तुम भूलो हम याद करें !
क्या और तुम्हारे बाद करें ?

पहले ही ज़हर पी आये हैं,
क्यूं मै तेरी बरबाद करें

जब दिल में पराई है धड़कन
हम क्या इसकी इमदाद करें

उनकी महफ़िल–उनकी मर्जी
हम कौन हैं जो फ़रियाद करें

आ जा कि बहारों में रोयें
आ ढंग नया ईजाद करें

क्या बात 'हक़ीर' करें उनकी
कब जाने क्या इर्शाद करें !

ग़ज़लों में ढला वो प्यार जले
मुझ शाइर का संसार जले

उस फूल की खातिर, खार जले
गुलज़ार जले गुलज़ार जले

जलता है मेरी आंखों में अभी
पर्दों में तेरा दीदार जले

रुक तो ए तबस्सुम–ए–रक़साँ
हर गाम पे इक झनकार जले

नज़रों में जले है रूप तेरा
होठों पे तेरा इनकार जले

अब रोक सके तो रोक ज़रा
उम्मीद जले आसार जले ।

तरसी हुई निगाह को आराम आ गया
इन आंसुओं के बीच तेरा नाम आ गया

यारब! जहाँ में रह गये मसरूफ़ हो के हम –
मरने को जब चले तो कोई काम आ गया

कितनी सई के बाद भी रोके नहीं रुका
उन पर जो आ गया कि दिल तमाम आ गया

ज़िंदादिली का दौर जहां में, कि देखिये
गोया ज़हर को पूछिये कि जाम आ गया

जब भी गली से यार की गुज़रे हैं हम 'हक़ीर'
हर बार यूं लगा कि लो मुक़ाम आ गया।

हम ग़रीबों का कोई आसमां नहीं होता
कोई घर–बार कोई आशियां नहीं होता

यहां की ज़िंदगी के चार दिन नहीं होते
किसी का ख़्वाब यहां पर जवां नहीं होता

हमारे ख़ून–पसीने से तर इमारत है
हमें नसीब कहीं साएबाँ नहीं होता !

न हम सेदूर कोई है जो ले ख़बर आकर
हमारे पास कोई पासबां नहीं होता

हज़ार दर्द भरे हैं 'हक़ीर' बस्ती में
ज़माने बीत गये हमज़बां नहीं होता !

लगता है वक्त बर्क़ की सूरत निकल गया !
शीशा बदल गया है के चेहरा बदल गया ?

सबसे हसीन बुत था मेरे पास मोम का–
पत्थर के साथ रह के भी आखिर पिघल गया !

ऐसा लगा कि जैसे मेरे घर में आग हो–
वो खत कि मेरे सामने आंखों में जल गया !

सागर ही में ठहरा मेरी आंखों का दोआबा
मैं खुशनसीब था जो समंदर से मिल गया ।

महँगी पड़ी चिराग़ से 'हक़ीर' दुश्मनी–
कर के बहाना आफ़ताब रोज़ ढल गया !

खिज़ांरसीद हैं, काग़ज़ का प्यार ले आएं
चलो नसीब कहीं से उधार ले आएं

ये खारज़ार, बहुत चुप है–बोलता ही नहीं !
कोई कहे तो अभी हम बहार ले आएं

खुतूत कम ही लाइयेगा नामाबर लेकिन
जो आइये तो फ़क़त इन्तज़ार ले आएं

चलो कि आज उन से दिल की बात कह डालें–
खुदा करे वो हम पे ए'तबार ले आएं

या मैकदे की कोई बात हम से मत कहिये
या इस ग़रीब की खातिर क़रार ले आएं।

न ऐसा दिन कभी आया न शब ऐसी कभी आई
हमारे दिल में जो आई कहां लब तक कभी आई !

बहुत ही मुख़्तसर होकर कहानी रह गई यारो !
न उसने दीप सुलगाये न हम तक रौशनी आई

हसीं तो लाख था वो बुत मगर वो सग ही ठहरा–
अबस हम इश्क़ से उलझे, अबस ही आंख भर आई

न हमको देखकर गुलशन में कोई फूल मुस्काया
तो दामन खींचते कांटों की दिल में याद भर आई

हुई दीवानगी की इब्तिदा तो यूं हुई यारब !
कि पहले फूट कर रोए पे आई तो हंसी आई !

खुशी से दर–ब–दर की ठोकरें खाते हुए चलिये
पए–दरिया कभी गिरते कभी गाते हुए चलिये

सफ़र है ज़िंदगी जैसे गली महबूब की यारों !
कभी आते हुए चलिये, कभी जाते हुए चलिये

संभल कर इश्क़ में हमने समझदारी कहां की है ?
मज़ा तब है कि अपने पैर उलझाते हुए चलिये

ज़रा रुक जाइये, उनके तड़पने ही से क्या होगा ?
ज़रा आंखों में उनकी अश्क भी लाते हुए चलिये

अभी कल ही नज़र के तीर से घायल हुए हैं हम
क़सम है आपको गर आज शरमाते हुए चलिये ।

नुमाइश है लगी ज़ख्मों की इस दिल में
मज़ा आयेगा मुझको खाक महफ़िल में

चिता से भी मेरी नज़रें चुराता है –
कमी है हौसले की आज क़ातिल में !

किसी के गल पर सूखे हुए आंसू –
वही सूरत नज़र आती है साहिल में

सितारे, चांद, सूरज देखते होंगे
सुना है आग–सी भड़की है जगल में !

अंधेरों में मेरे घर का दिया यारो !
कमल जैसे खिला कोई हो दलदल में ।

खुदा, करे कि मेरी आरज़ू सताये तुझे
तेरा गुरूर कभी टूट कर बनाये तुझे

कहीं तू भूल न बैठे मेरी वो नम आंखें
गरज के आये जो बरसात वो रुलाये तुझे

मेरी वो बात, मेरे टूटने का मंज़र भी
शबे–फ़िराक़ में वो दर्द याद आये तुझे

मेरा वो घर कि जो खामोश रो रहा होगा
कोई तो है जो मेरी दास्तां सुनाये तुझे

वो आईना भी तेरी हर अदा का आशिक़ है
कोई नहीं है जो तेरी खता बताये तुझे !

फिर दूसरे जनम के लिए मुंतज़िर हूं मैं
ए काश ! हो कि सूरते-शामो-सहर हूं मैं

यारों ! लगे है, आईना जैसे हो अजनबी
खुद को भी नहीं जानती ऐसी नज़र हूं मैं

देखा भी हो तुम्हें तो कुछ खयाल ही नहीं-
उस दिन से ले के आज तलक चश्मे-तर हूं मैं

कुछ भी कहा तुझे तो क़सम टूट जायेगी,
पढ़ना तो जानता है न? पढ़ ले, खबर हूं मैं

अब के लगी जो ठेस तो शायद न उठ सकूं,
अब तुझसे क्या 'हक़ीर' बताऊं किधर हूं मैं ?

दैरो हरम के नाम संगज़ार-सा मिला
इन्सां वहां मिला न हमें देवता मिला

रंगीनियां जहान की औरों को मिल गईं,
ले दे के देखने को हमें आईना मिला

मासूमियत में ज़ख्म अगर खा लिये तो क्या-
दाना ही बन चले हैं हमें दर्द क्या मिला !

दो टूक अवाक् रह गये-तुर्फ़ा हिसाब था-
दुश्मन के हाथ यार का पयाम क्या मिला !

तस्वीर टूटते ही घिर गये थे हम 'हक़ीर'
कमरे में कांच बन के वो हर-सू पड़ा मिला।

हरचन्द दिल से ख़ाम-ख़याली नहीं गई
कोई भी रात दर्द से ख़ाली नहीं गई

जैसे भी हो दिमाग़ को हमने मना लिया—
पर दिल से उनकी याद निकाली नहीं गई

मजबूर हो के मौत मांगनी पड़ी हमें
हाए ! वो ज़िंदगी जो संभाली नहीं गई

वो बुत जहाँ को हमने बनकर दिखा दिया—
जिसमें ख़ुदा से जान भी डाली नहीं गई

मेहंदी रचाए यूं तो ज़माने गुज़र गये,
फिर भी चमन के हाथ से लाली नहीं गई !

जब कभी आग-सी लगती है आशियाने में
लाख बरसात भी पड़ती है कम बुझाने में

चंद तिनके हैं मेरे हाथ में अभी यारो
है अभी देर बहुत देर डूब जाने में

फिर किसी शख़्स ने छेड़ा तेरी कहानी को
फिर मेरे दर्द के चर्चे उठे ज़माने में

हैं बहुत ही क़रीब आज अंधेरे मुझसे
क्यूँ भला दीप जलाऊँ ग़रीबखाने में

एक थी मौत ए 'हक़ीर' आ के लेट गई
रह गई ज़िंदगी कि ओढ़ने-बिछाने में ॥

गुज़रे जो संगतराश रहे–क़त्लगाह पर
पत्थर भी काँप जाएँगे उसकी निगाह पर

रंगों का इंतिख़ाब हमारा न पूछिये –
नज़रें लगी हुई हैं तो अब्रे–सियाह पर !

आवारगी ही काम है आठों पहर जिन्हें
अपना तो ए'तबार नहीं शम्सो–माह पर

लगता है रात जुर्म आसमां ने कर दिये–
पर्दा किये हुई थी चाँदनी गुनाह पर

खेतों में ऐ 'हक़ीर' ! जलाया था कल जिसे
वो ही तो भीख माँगता था शाहराह पर ॥

इल्ज़ाम दीजिये भी तो कश्ती के सर नहीं
पहले से इस ग़रीब की क़िस्मत में घर नहीं

ऐसा भी तो कोई हो जो अपना हो दोस्तो !
हमको चिराग़ चाहिये, शम्सो–क़मर नहीं

हर चन्द चौंकते हैं शीशे को देखकर
ग़ाफ़िल तो हैं ज़रूर मगर इस क़दर नहीं

अपना इलाज खुद ही कर रही है ज़िंदगी –
इससे बड़ा जहान में कोई ज़हर नहीं

उस पार छोड़ आये हैं पुरखों का घर 'हक़ीर'
सौ बार हमको ढूँढ़िये लेकिन इधर नहीं ॥

बहते रहेंगे लाश की सूरत नदी के साथ
हम दिन गुज़ार देंगे इसी बेखुदी के साथ

अखबार ही तो शहर में गोया हैं आजकल
शायद ही बोलता है कोई आदमी के साथ

अपने ही रोज़नामचे से डर रहे हैं हम
करता रहा मज़ाक़ कोई ज़िंदगी के साथ

यह ठीक है कि आज कहीं के नहीं रहे
घर से चले थे हम तो चले थे खुशी के साथ

बनवा लिया है अपना अच्छा-सा बुत 'हक़ीर'
मर के रहेंगे हम, तो रहेंगे इसी के साथ ॥

किसी के पैर पर देखो जहाँ झनकार है घुंघरू ।
किसी के हाथ पर देखो जहाँ फ़नकार है घुंघरू ॥

तमन्ना है वफ़ा की है दिखावा बेवफ़ाई का ।
किसी मजबूर शायर का कोई किरदार है घुंघरू ॥

किसी वीरान दुनिया में उमड़ता प्यार है घुंघरू ।
किया जाता है काँटों से वही सिंगार है घुंघरू ॥

किन्हीं मखमूर आंखों से बहे आंसू–गिरे मोती ।
गिरे मोती पिरोकर जो बनाया हार है घुंघरू ॥

जमाने की जफ़ाओं का तजुर्बेकार है घुंघरू ।
तुम्हारा हो न हो लेकिन मेरा तो यार है घुंघरू ॥

ए खुदा तेरी तमन्ना हम कभी करते नहीं
ज़िंदगी का ज़हर खाकर बंदगी करते नहीं

हम उजाले फूंक देते दोस्ती की है ग़रज़
शम्अ की हमको पड़ी है, चाँद से डरते नहीं

हादसा वीरानियों में अब कोई होता नहीं
ओस भी रोती नहीं यां फूल भी गिरते नहीं

रो रही होगी ज़मीं मातम दरारों का किए
हम कभी तस्वीर के टुकड़े लिए फिरते नहीं

है अभी मक़दूर इतना फ़ासिला तय कर सकें
जा तेरी दीवार के साये तले मरते नहीं ॥

जनाज़ा आज हम अपनी हिक़ारत का उठाएंगे
बहारें छोड़ जाएं तो ख़िज़ां के साथ जाएंगे

शमा होती नहीं कुछ भी सिवा रौशन चिराग़ों के
शमा सुख की नहीं जलती, शमा ग़म की जलाएंगे

मुक़द्दर बस मुक़द्दर है, नहीं करना कभी शिकवा
अज़ल के साथ आए ग़म अजल के साथ जाएंगे

तेरी दुनिया जलाएंगे 'हक़ीर' रौंद जाएंगे
ज़माने को तेरे तब ही ज़माने याद आएंगे ॥

तराज़ू तोलने वाले तेरी क्या नागवारी है
कहां इंसाफ़ बाक़ी है, कहां इंसाफ़ जारी है

इधर है भूख के शोले, उधर तदबीर सारी है
इधर है घूंट अश्कों के उधर तक़दीर सारी है

किसी ने आज रो-रोकर अज़ानें फिर सुनाई हैं
ग़ज़ब हमदर्द की मेरे, ग़ज़ब की ग़मगुसारी है

न जाने ज़िंदगी अपनी मुझे क्यूं आज प्यारी है
नहीं ये राह फूलों की, सफ़र ये रेगज़ारी है

भिखारी थे 'हक़ीरा' हम, अभी तक हम भिखारी हैं
ख़जाना ना कहो इसको, महज़ कुछ रेज़गारी है ॥

कभी दिल लगाकर लगन देखते हैं
कभी दिल जलाकर जलन देखते हैं

कोई हद नहीं है इन मजबूरियों की
हर इक आदमी का जतन देखते हैं

कोई जा के कह दे बहारों से इतना
खिज़ां में उजड़ता चमन देखते हैं

कोई प्यार करके तड़पता है कैसे
कभी हम सजनिया–सजन देखते हैं

कभी याद आई हमें अपने घर की
तो ढककर जनाज़ा कफ़न देखते हैं

बहारों में घूमे, समंदर में डूबे
मगर सोख़तन–ए–जहन देखते हैं

तेरी याद जैसे नमक बन गई है
होता है कितना सहन देखते हैं ॥

हवाओं पे हमको भरोसा नहीं है
थपेड़ों से अपनी गुज़र पूछते हैं

मस्जिद की चौखट की बेवा भिखारन
तुझी से खुदा की खबर पूछते हैं

गिरजाघरों में कभी मंदिरों में
जहाँ पूछते हैं — मफ़र पूछते हैं

शमा, ए लहद की हमें ये बता दे
कि बाक़ी है कितनी, उमर पूछते हैं

तेरी मौत पे कौन रोए 'हक़ीरा'
यही कह रहे हैं, जिधर पूछते हैं ॥

मैं सोचता हूं ए दिल किसका खयाल लाऊं ?
किसको कहूं मैं अपना किसको खुदा बनाऊं ?

खामोश हो गया हूं किस क़द्र मैं यहां पर ।
किसकी मिसाल दूं मैं, किसकी क़सम उठाऊं ?

कटता नहीं है मुझसे अब वक़्त ज़िंदगी का,
हो दिन तो काट लूं मैं-हो रात तो बिताऊं ।

इस जाम से कोई हक़ मत मांग यार मेरे,
इतने नहीं हैं आंसू जो मैकदा बनाऊं ।

अब तो 'हक़ीर' मुझको महेफ़िल की आरज़ू है ।
आदत नहीं है लेकिन कहो तो मुस्कुराऊं ॥

जब भी हम वक़्त की गहराई से घबराते हैं,
तेरे कूचे की तरफ़ यूं ही निकल जाते हैं ।

हर क़दम पर खड़े होते हैं कई ताजमहल,
जब गुज़रते हैं वहां से तो मुस्कुराते हैं ।

हैं अभी और भी गुलशन के सहारे बाक़ी,
चंद कांटे हैं जो फूलों का ग़म मनाते हैं ।

लोग ठोकर ही से रस्ते से हटा देते हैं,
और इक हम हैं जो पत्थर को आज़माते हैं ।

हमें 'हक़ीर' तरन्नुम पे कोई हक़ ही नहीं,
हाए वो गीत जो आशिक़ की ज़ुबां पाते हैं ॥

न दिल के हैं न दुनिया के, कहां अपना गुज़ारा है !
चले जाते हैं मैख़ाने—हमें उलफ़त ने मारा है

न पूछें जाम की मस्ती न कहिये नुक़से—पैमाना
हमारे ख़ूं—सा रंगीं है, हमारी जां से प्यारा है

नशे में भी तेरी बातें, सितम के होश में चर्चे
तेरी हर बात को हमने बहुत गहरा उतारा है

बहुत सोचा कि पत्थर हैं नमी—सी आ गई लेकिन
कोई बोला कि मोती है कोई बोला सितारा है

बज़्म में देर तक हंसते रहे थे उनकी बातों पे
हमें मालूम ही क्या था कि वो चर्चा हमारा है ॥

हंस रहा हूं गो मेरी आदत ही नहीं
मैं इक ऐसा घर हूं जिसकी छत ही नहीं

किस क़दर बदला है दुनिया ने मुझे
आईने में अब मेरी सूरत ही नहीं

जल रहा है दिल किसी अंगार-सा
दूर तक बरसात की सूरत ही नहीं

याद में जलना है मेरी ज़िंदगी
अब मुझे इस आग से फ़ुर्सत ही नहीं

सोचकर के मुस्कुरा लूं मैं जिसे
हाँ, मेरी क़िस्मत में वो साअत ही नहीं ॥

आज एक आईनाखाने का ख्वाब देखा है;
मैंने उस हुस्न को महवे-शराब देखा है ।

जाने किस रूप में देखा है उस परी-रुख को;
हिसाब ये के उसे बेहिसाब देखा है ।

दिन में हूं बेख़याल-सा, रातों में होशियार,
इश्क़ की आड़ से क्या-क्या जनाब देखा है ।

जब मिल गये कहीं तो कुछ गिला नहीं रहा;
तनहाइयों के बीच मगर इंक़िलाब देखा है ।

अब ए 'हक़ीर' देखिये क्या हाल हो तेरा !
इश्क़ की मार का किसने जवाब देखा है !!

मुझे वीरानियों के बीच ही रहना पड़ेगा
देर से ही सही लेकिन मुझे रोना पड़ेगा

जुल्म कर ले वही अब के हसरत ही निकल जाए
दुबारा ज़िंदगी पाई तो फिर जीना पड़ेगा

मुझे हंसने की ख़्वाहिश है–अजी इंसान ही तो हूं
मगर उस दिल का क्या होगा जिसे जलना पड़ेगा

नहीं है इंतिहा ग़म की, न रेगिस्तां न जुल्मत की
कहां तक कारवां को और भी चलना पड़ेगा

शबे–फ़ुर्क़त इधर है तो उधर हुस्न का आलम
जहां ले जाएंगी राहें वहीं चलना पड़ेगा ॥

हो गया ज़ख्म तो भरने की दुआ करते हो !
रस्म ये कौनसी उलफ़त में अदा करते हो !!

गुनाहे – दिल है तो इतना कि बड़ा नाज़ुक है
क्यूं किसी संग–सा बर्ताव किया करते हो !

बयाने–दर्द नहीं है पे दर्द है फिर भी
कौनसी हाजत – ओ – हसरात रवा करते हो !

ग़मे – ज़िगर के सिवा अब तो ग़म नहीं कोई
देखिये किस तरह इस ग़म की दवा करते हो !

'हक़ीर' ज़ख्म से आराम ही नहीं मिलता
यार ! ये कौन-से दामन की हवा करते हो !

बेवफ़ा ! इश्क़ की कुछ तो मियाद बढ़ जाए
खुदा करे कि तुझे मेरी उम्र लग जाए

मेरी ख्वाहिश है – मेरे साथ इक फ़साना हो
जिसको तस्वीरे – मुहब्बत का नाम मिल जाए

दुआ है मुझको मिले प्यार से भरी वो नज़र
तेरी नज़र को मेरा इंतज़ार मिल जाए

मुझ से नादान की दुनिया को ज़रूरत क्या है !
बस तेरा हुस्न सलामत रहे – निखर जाए

हुस्न की चाह है कि क़त्ल की तारीफ़ करो
कोई ख़ामोश हो गया तो वो किधर जाए ॥

लगता है ज़िंदगी की अब शाम हो गई है
बेनाम–सी मुहब्बत बदनाम हो गई है

क्या करेंगे हुस्न के आशिक़–जहां के बद–क़िमार
जैसी भी थी हवेली नीलाम हो गई है

सोचते ही सोचते गुज़रेगी क्या सारी उमर !
'अब मुक़द्दर की सितमज़ारी तमाम हो गई है'

रूठना तो चाहते हैं – रूठ पर सकते नहीं
जब नज़र उनसे मिली तो खुद सलाम हो गई है

कह दिया हमको जहां ने इक दीवाना ए 'हक़ीर'
जब हमारी बेक़रारी बेलगाम हो गई है ॥

मेरे वीराने में ये कौन चला आया है ?
क्या ज़रूरत थी, यहां आ के मुस्कुराया है ?

जानता हूं के इबादत ही मेरी झूठी है;
हाय ! इक संग को मैंने खुदा बनाया है

सर्फ़े–उलफ़त हैं मेरी हस्ती – मेरे शेरो – ग़ज़ल
अब मेरा ग़म, मेरा दिल सभी पराया है !

बाक़ी बचते हैं मेरे आंसू – मेरे जामो – ज़हर
मैंने आंखों में जैसे मैकदा सजाया है

मेरी पस्ती पे दरीचों से शोख़ हँसता है
अभी 'हक़ीर' को जी भर कहां सताया है ?!

कैसे बनेगी इस तरह तस्वीर यार की ?
ढलने लगी है शाम अब अहदे–बहार की !

महफ़िल में तू नहीं है मगर तू ही तू तो है ;
क्या बात है नज़र में बसे इंतज़ार की !

ज़िंदा हूं बादे–तर्के–तआल्लुक़ के आज तक ,
ना जाने क्या लिखा है क़िस्मत में यार की ?

भह वाह ! तेरे इश्क़ की तारीफ़ क्या कहूं !
बदनामियां मिली हैं किसी गुनहगार की!!

है अब 'हक़ीर' इम्तिहाने-ज़ब्ते-दिल सम्भल !
क़ीमत लगा ही चाहती है ख़ाकसार की !

हर लम्ह मुसव्विर है – तस्वीरकार है ;
तुझसे भी कुछ हसीन तेरा इंतज़ार है !!

लौटा तेरे कूचे से कई बार इस तरह,
वो शौक़ पुराना – जो अभी बरक़रार है।

अब कैसे कहूं तूले–शबे–ग़म की बात मैं?
इतना कहां लफ़्ज़ों पे मेरा इख़्तियार है?

कुछ तंग भी आया हूं तेरी आदतों से मैं!
पर क्या करूं कि दिल को बस तुझीसे प्यार है?!

गुल कौन पेश कीजे अब उस हसीन को,
जिस पर कि खुद बहार की दुनिया निसार है !!

कुछ यूं शबे–फ़ुर्क़त में जिए जा रहा था मैं;
लम्हों से तेरा ज़िक्र किए जा रहा था मैं।

कुछ डर के तग़ाफ़ुल ही से तसवीर को तेरी;
क़समें उसी उलफ़त की दिए जा रहा था मैं।

अच्छा किया कि तुमने बहाना बदल दिया;
वर्ना यूं ही शराब पिए जा रहा था मैं।

आखिर मेरे सब्रो – क़रार धक–से हो लिये;
क्या चीज़ थी, अबस ही सिए जा रहा था मैं?

फूलों की तरह महक उठे थे कभी 'हक़ीर'—
झोली में चंद खार लिए जा रहा था मैं॥

अपने ही दिल को कब तलक छलता रहूंगा मैं ?
क्या यूं ही तुमसे ख़्वाब में मिलता रहूंगा मैं ?

ज़िंदादिली के बाद भी इक दिन तो मौत है—
जब तक खिज़ां न आएगी खिलता रहूंगा मैं

कब ज़ख़्म है – नासूर है; ऐ चारासाज़ जा—
फट–फट के फूट–फूट के सिलता रहूंगा मैं

तुम हुस्न हो, क़ायम रहो अपनी जगह पे तुम,
तस्वीर की तराह से गलता रहूंगा मैं

ये आंसूओं की धार है कि आग है 'हक़ीर' ?
जब तक ये बुझ न जाएगी जलता रहूंगा मैं ॥

ज़िंदगी सुश्क–से गालों पे सूख जाती है;
देखिए, किस तरह उलफ़त पे खिज़ां आती है ।

लबों पे गीत जो आते हैं – सहम जाते हैं;
सदा जो झूम के उठती है रूंध जाती है ।

देख ! शोलों के सिवा क्या है उनकी गलियों में;
हां, पे रंगीन बहुत नज़र आती है ।

यूं तो फ़ुर्सत ही कब मिली हमें सम्भलने से ?
और मिलती है तो अश्कों में डूब जाती है ।

किसी तरह बसर हो सकी तो कर लेंगे;
'हक़ीर' लोग तो कहते हैं "गुज़र जाती है" ॥

कई चेहरे हैं मेरे सामने पर सब पराए हैं
जलाने के लिए मुझको मेरी महेफ़िल में आए हैं

नहीं रुकतीं बहारें गुलसितां में देखता हूं मैं
न जाने किस लिए फिर बुलबुलों ने गीत गाए हैं

बहुत पीकर चला था पर उन्हीं गलियों में जा निकला
कि जब मैं भूलने को था उन्हें, वो याद आए हैं

अरे वाइज़ ! तेरा हम मैकशों से वास्ता क्या ?–जा,
यहां पर जो भी बैठे हैं अज़ल से चोट खाए हैं

हमेशा मुझको अपनी–सी लगे है धार काजल की,
तेरी आंखों में जाने कौन से जनमों के साए हैं ॥

अब वो ही बात कर जो तेरे दिल की बात हो
अच्छा है मेरे साथ मेरे कल की बात हो

जब छिड़ गई है बात किसी इश्क़े–ख़ास की
इक बार फिर से हुस्न–ए–कामिल की बात हो

मुझको खलिश–बसीन ए–घाइल से प्यार है
कुछ देर और ज़ुल्मे – मुसलसिल की बात हो

कांटों की तो आदत है उलझते रहेंगे ये
करनी है बात दामने – ग़ाफ़िल की बात हो

हर शख़्स चल रहा है भला इस तरह कि अब
साहिल की बात हो न मराहिल की बात हो

ग़ैरों की बात हो गई, अदू का ज़िक्र भी
अब उनके दिल की बात में इस दिल की बात हो ॥

गुलशन ग़मों को बांटने तैयार है 'हक़ीर'
हां, आज उसी नग़मा ए–बुलबुल की बात हो

महफ़िल से मेरी रौशनी लेकर वो चल दिये
तारीकियों में रह गए कुछ सुनहरे दिये

इक मुश्त खाक रख सका तूफ़ां से छीन के
कुछ तो बचा के रख सका हूं मैं तेरे लिये

कुछ शौक़ था सुरूर था उलफ़त में दिल के साथ
ऐसे ज़हर को पी गये कि जाम क्या पिये

जब उस हसीं की बात चली हो गये हरे
छाले जो सिये वक़्त ने कच्चे बहुत सिये

ये ज़िंदगी की चीज़ भी क्या खाक चीज़ है ?
जीना तो तेरे वास्ते मरना तेरे लिये ॥

बेबात तेरे ख़्वाब ने धोखा दिया मुझे
हर बार उस नक़ाब ने धोखा दिया मुझे

यूं तेरी हर निगाह से मैं होशियार था
साक़ी ! तेरी शराब ने धोखा दिया मुझे

रौशन किसी तरह मेरा आंगन नहीं हुआ
महताबो–आफ़ताब ने धोखा दिया मुझे

खुश हूं, मगर दिखाऊं क्या कि क्या दिया मुझे
कुछ यूं दिया जनाब ने धोखा दिया मुझे

हँसते हैं मुड़के देखते हैं, कुछ तो है 'हक़ीर'
लेकिन इसी हिसाब ने धोखा दिया मुझे ॥

ए मेरे रुबाब ! हक़ीक़त हो जा
हफ़्त-अफ़लाक की ज़ीनत हो जा

न जी, ए दिल ! किसी का दिल बन के
परी-रुखों की अमानत हो जा !

नज़र उठे तो बन के इश्क़ मचल
नज़र झुके तो नज़ाकत हो जा

नज़र में बात हो – तो जीना है—
बस ज़रा शौक़ से आदत हो जा

'हक़ीर' अश्क बन के यूं रो ले—
किसी ग़रीब की इज़्ज़त हो जा ॥

मेरे जुनूं के दायरे से दूर है कोई
मुझको सताने पर क्यूं मजबूर है कोई

हर सुबह तेरी याद है हर शाम तेरा ग़म
सुर्ख़ी नहीं, फ़लक पर सिंदूर है कोई !

कुछ इंतज़ार कर लूं कुछ बेक़रार हो लूं;
कितना हसीन ग़म है – मग़रूर है कोई

अब किस तरह से भूलिये इस बेवफ़ा का नाम !
दिल में भी दिल के नाम से मशहूर है कोई !

दुनिया 'हक़ीर' अपनी उसकी नज़र करूं हूं
कहते हैं आशिक़ों का दस्तूर है कोई ॥

ज़िंदगी बीत गई नालों में
इश्क़ के आख़िरी सवालों में

हाँ ! तेरी बात नहीं आई थी
यूं तो हर चीज़ थी पियालों में

इश्क़ ही इश्क़ निगाहों में रहे
बस तेरा हुस्न हो खयालों में

चर्ख की कोई शै नहीं छूटी—
हुस्न को दी गईं मिसालों में

मुझसे रूठे ही न हों वो शायद !
क्यूं कोई फूल न था बालों में !

जब तलक ख़ैर मैकदे में हो—
क्यूं कोई जायेगा शिवालों में ?

न क्यूं 'हक़ीर' बनेगी सेहत ?
अपना तो घर है हुस्नवालों में ॥

सदियां हुईं गाते हुए
मेहज़ बयां पाते हुए ?

जो भी क़दम था—था बला
आते हुए, जाते हुए

हर खिश्त बेगानी मिली
तामीर बनवाते हुए

जोड़ा जो दिल—पहचान है
तोड़ा गया – नाते हुए

जब भी मिले उनसे 'हक़ीर'
कुछ खुद को समझाते हुए ॥

तेरे चमन से चला हूं मैं चश्मे-तर लेकर
सीनए-चाक दबाए हूं - दामां तर लेकर

पुरानी राह पे चलता हूं अजनबी बन के
बड़ी उदास, बड़ी बेवजह उमर लेकर

समंदरों में हूं कभी तो कभी साहिल पे
मौजज़न ज़िंदगी औ' रेत का शहर लेकर

पूछ ले सातों आसमां से कोई चाहे तो
सभी ने बर्क़ गिराई है मेरा सर लेकर

ज़ुबां गई तो चला हूं खुदा से कहने मैं
कभी न बोल सकेगी वही नज़र लेकर ॥

भूला हुआ ख्वाब सजाया था
फिर ताजमहल बनवाया था

है रिश्ता-ए-खास मेरा उससे
अपना भी नहीं, न पराया था

उफ़ हैफ़ ! फ़रेबे-दीदा-ए-गुल !
सावन - सावन भरमाया था

मंदिर में कभी मस्जिद में कभी
हरचन्द तुझे दोहराया था

आये तो थे तर्के - तआल्लुक़ को
बालों में फूल लगाया था

जाने के लिए आये थे वो -
यारब ! मैं यहां क्यूं आया था ?

जब दिले–नादां हमें याद आयेगा
एक आंसू तो छलक ही जायेगा

जायेगा शायद हमारी क़ब्र तक
पर हमारे घर कोई क्यूं आयेगा ?

तुन्द है तूफ़ान की क़ातिल हवा –
आज साहिल पर कोई तो आयेगा

खेल है ऐसा यहां पर ज़िंदगी –
जीत कर भी कौन घर तक जायेगा ?

हमने हर अंदाज़ से बदली नज़र –
थी हमें उम्मीद वो मुस्कायेगा ! ॥

ये उन बादलों की बस्ती है !
कि बस नज़र यहां बरसती है !

चेहरे उगल रहा है जहां
निगाह क्यूं मेरी तरसती है ?

ये पल में क्या हुआ मुझको –
हज़ार ताने बहार कसती है ?

साहिल ! ज़रा ज़ुबान संभाल
तेरा जवाब मेरी कश्ती है

हटा दे शीशा – ए – गुज़श्त
'हक़ीर' आंख गर झुलसती है ॥

दर्द अब खुद ही चारागर हो गया है,
यार जलने से जिगर पत्थर हो गया है ।

अश्क आते ही हंसी आती है,
न जाने किस जादू का असर हो गया है ।

इश्क़ के अंदाज़ की सीमा देखो हुजूर,
धुआं भी शम्अ पर साबिर हो गया है ।

ख्वार कहता है कि हुजूमे – बहारां,
देखते – देखते ही काफ़िर हो गया है ।

देखता हूं मैं 'हक़ीर' आशियां अपना,
खुदारा ! किसी ग़ैर का घर हो गया है ॥

ये किस तरह से आज सहारों ने पुकारा !
तूफ़ां के साथ – साथ क़रारों ने पुकारा !!

नदियों की तरह क्यूं न बहे खून–पसीना,
इंसाँ की तरह आज सियारों ने पुकारा !

मरते हुए ग़रीब नज़र को उठा गया
गूंगी ज़ुबान और इशारों ने पुकारा !

कालिख–सी बढ़ चली है मिनारों की नोक पर,
अल्लाह, तुझे आज इजारों ने पुकारा !

सुनसान वादियां गए कि कुछ सुकूं मिले,
बीती की सोगवार पुकारों ने पुकारा !

चलने की आरज़ू – कि कहीं दूर ले चली,
हद हो गई तो राहगुज़ारों ने पुकारा !

कांधे पे लिए चल दिए, जिसको खबर नहीं,
ज्वाला ने पुकारा कि मज़ारों ने पुकारा !

कहा, अज़ान कभी नारसा नहीं होती
मेरी उजाड़ तबीयत रवा नहीं होती

ए मेरे यार मुझे दे न भरोसा झूठा
मुझसे बर्दाश्त तेरी ये दवा नहीं होती

सुरूरे-आह बड़ी चीज़ है मुहब्बत में
उठा के हाथ मेरे दिल दुआ नहीं होती

बेवफ़ा दूर रहे हाल बिगड़ते देखा
न होते दूर, मेरे साथ क्या नहीं होती !

मुझको जीने के लिए साँस की ज़रूरत है
उनके दामन से कभी वो हवा नहीं होती ॥

मेरी कहानी कहती है ये पवन कब से,
पे सुन रहा है खामोश-सा चमन कब से।

जैसे झुक-झुक के मेरी दाद दे रही है कली,
संग से पांव के होते रहे मिलन कब से।

हूं आफ़रीन मैं फूलों के इस तबस्सुम पर,
मेरे ग़मों को बांटते हैं ये सुमन कब से।

मेरी दास्तान, कि खत्म ही नहीं होती,
आशियानों में सो गये हैं कुछ बदन कब से ॥

इक नज़र ही तो मिलानी है, चले जाएंगे
रस्म भर ही तो निभानी है, चले जाएंगे

तेरे सीने से लिपट जाएं ना कहीं फिर से
जाने अब कैसे बितानी है, चले जाएंगे

चलो रक़ीब ! आपस में अलविदा कह लें
दोस्ती फिर से निभानी है, चले जाएंगे

दो दिन ही के मेहमां थे तेरे कूचे के
और दो दिन ही बितानी है, चले जाएंगे

आख़िरी जाम पिला दे 'हक़ीर' को साक़ी
होश की बात सुनानी है, चले जाएंगे ॥

बहुत-सा ग़म छुपा है देख मेरी दास्तां में
मगर चुप हूं कि पत्थर बन के बैठा हूं जहां में

खुदा ! कुछ तो मेरी यादें बची होंगी चमन में
कि माली ने मुझे देखा था उस दिन आशियां में

मेरी हस्ती मेरे साये तड़पते हैं अकेले
मेरा तो हमसफ़र कोई नहीं हैं कारवां में

मेरे घुटने से जाने क्या मज़ा आता है उस दिल को
न जाने कौनसी हसरत बची है मेहरबां में

सलामत रंग हों तेरे मुबारक हों तुझे खुशियां
तेरा हर इक तबस्सुम हो अमर इस गुलसितां में ॥

शाम हो जाए तो बता देना
दर्द छा जाए तो बता देना

फ़ासिला ज़ीस्त का ज़रा गिन लूं
दार आ जाए तो बता देना

दर्द के गीत लिख रहा हूँ मैं
अश्क आ जाए तो बता देना

कफ़न–बदस्त लिए कहते हैं
'हक़ीर' आए तो बता देना ॥

मेरे गीत कोई तो गायेगा
मेरी आंखें बरसाने को इक रोज़ गवैया आयेगा.....

सरगम से बरसेगा सावन
रिमझिम-रिमझिम, छनछन-छनछन
यह दर्द का सूखा खेत मेरा फिर से उपवन बन जायेगा.....

कुछ साज़ों में बातें होंगी
कुछ बोलों में बातें होंगी
कुछ मैं उसको समझाऊंगा, कुछ वो मुझको समझायेगा.....

आवाज़ तराशेगी नग़मे
साकार बना देगी नग़मे
शायद मेरा बिछड़ा साथी उस वक़्त मुझे मिल जायेगा.....

मेरे गीत कोई तो गायेगा
मेरी आंखें बरसाने को इक रोज़ गवैया आयेगा.....

मंदिर में दीपक का जलना ।

प्रभु मुख-मंडल करे उज्ज्वलित
और पुजारी भी है मोहित
थरथरते जीवन में पग–पग गिरना और सम्भलना ।
मंदिर में दीपक का जलना...

बना अंधेरे का हमजोली
फैलाकर जीवन की झोली
तिमिर–नगर में नैन उनींदे लिये रोज़ झिलमिलना ।
मंदिर में दीपक का जलना...

कमलपत्र–सा देह मचलता
समय देखकर घटता–बढ़ता
सूर्य चढ़े तो नैन मूंदना–ढले रात फिर खिलना ।
मंदिर में दीपक का जलना...

कोई था जिसको पाया था गंवाया था

कि जिसके वास्ते मंज़ूर थे लाखों ज़हर मुझको
जहां के ग़म सभी मंज़ूर थे आठों पहर मुझको
कोई था, सिर्फ़ साया था, पराया था...कोई था.....

किसी ने आँख में काजल लगाया था मेरी ख़ातिर
किसी ने फूल बालों में सजाया था मेरी ख़ातिर
कोई था, मुस्कुराया था, लजाया था...कोई था.....

कई चेहरे भुलाए से भुलाए जा नहीं सकते
सुलगती आँख को अब अश्क भी समझा नहीं सकते
कोई था, याद आया था, रूलाया था...कोई था.....

मुझे मा'लूम था इक दिन मुझे तुम भूल जाओगी

कोई कब याद करता है भला बीती हुई बातें
कहीं खोये हुए दो-चार दिन, गुज़री हुई रातें
मेरी तनहाइयों पर भी खुशी से मुस्कुराओगी
.....मुझे मा'लूम था.....

शहर मायूसियों के इक छलकते जाम-सा होगा
जहां होगा मेरे दिल का मगर बेनाम-सा होगा
मेरी दुनिया हमेशा के लिये तुम छोड़ जाओगी
.....मुझे मा'लूम था.....

ज़माने से यही डर था जो मेरे साथ रहता था
मेरा दिल जो भी कहता था बहुत ही ठीक कहता था
जिसे तुम ग़ैर कहती थीं उसे अपना बना लोगी
.....मुझे मा'लूम था.....

मेरी तस्वीर, मेरे खत बुरा अंजाम पाएंगे
मेरी दहलीज़ पर वो खाक बनकर लौट आएंगे
मेरा नामो-निशां भी तुम कहानी से मिटा दोगी
.....मुझे मा'लूम था.....

संध्या सागर तट पर छाई।

रंग सुनहरी साड़ी सजकर
पग-पग पर मस्ती भर चलकर
मौजों ने हौले से उठकर मादक पलक झुकाई।

रंग गठरिया बाँध के बादल
उड़े पवन के संग हो पागल
अस्त हो गया अरुण, रह गई अंकित हो अरुणाई।

मन ही मन सब भाँप रही है
छूते-छूते काँप रही है
पेड़ों में छुपकर, कुछ ढलकर बिरहिन की परछाईं।

संध्या सागर तट पर छाई।

डूब गई नैया कागज़ की।

क़दम-क़दम पर तूफ़ां आए
लाख-लाख हिचकोले खाए
रात, अंत का लिये संदेशा, फिर आई मावस की।

बदन थकन से चूर-चूर था
और किनारा भी सुदूर था
एक साँस ऐसी के लेकर गई शक्ति नस-नस की।

किसी टूटते तारे जैसी
अक्सर उस बंजारे जैसी
लाश बनी भटका करती है जैसे लावारिस की।

डूब गई नैया कागज़ की।

ऐ दोस्त ! मुझे मंजूर नहीं
यूँ आज तेरा घर से जाना.....ऐ दोस्त !

आवाज़ तेरी लेकर बुलबुल
जब-जब भी गीत सुनायेगी
गुलज़ार की सूरत में तब-तब
तेरी सूरत बस जायेगी
कुछ ढूंढ़ हरीमे-इश्क़ नया—
जाना ही कोई दस्तूर नहीं.....यूं आज...

चुपके से दर्द अगर उभरा
चुपके-चुपके ही रो लेंगे
तेरी खातिर ये नैन मेरे
गंगा और जमुना हो लेंगे
माना कि पास नहीं मेरे
लेकिन मुझसे तू दूर नहीं.....यूं आज...

वो प्यार मुझे याद आया।

बचपन की नगरी में मचला
यौवन के आँगन में पिघला
चला कई आशाएं लेकर किन्तु बहुत भरमाया।
वो प्यार मुझे याद आया।

जब नयनों की भाषा पढ़ते–
पढ़ते स्वप्न सजीले मढ़ते
खो जाने की मधुर घड़ी ने बरसों मुझे सताया।
वो प्यार मुझे याद आया।

अंत बहुत जाना-माना था
हाँ, पर मुझसे अनजाना था
भ्रंत हुआ पर लगा यही के अंत नहीं हो पाया।
वो प्यार मुझे याद आया।

मुझसे वो प्यार नहीं करते

ऐ दोस्त ! बता क्या गाऊं मैं ?
कुछ तो हो जो इतराऊं मैं !
मुख से कहना तो दूर कभी आँखें भी चार नहीं करते
मुझसे वो प्यार नहीं करते

उनको ईश्वर से माँगूंगा
कल मंदिर भी हो आऊंगा
क्यूं उन गलियों के पत्थर भी मुझ पर उपकार नहीं करते ?
मुझसे वो प्यार नहीं करते

वो स्वप्न मेरे चिरसंचित–से,
कुछ पीड़ित–से, कुछ खंडित–से
टूटे विश्वास मेरे धारण कोई आकार नहीं करते
मुझसे वो प्यार नहीं करते।

मुझे याद अपना बचपन आया !

इस घर की जीर्ण दिशाओं से
इन बूढ़ी आकांक्षाओं से
फिर आज मेरे स्मृतिमण्डप में अपने घर का आँगन आया
मुझे याद अपना बचपन आया !

उन्मुक्त हास्य, निर्दोष वदन
जीवन प्रभात की प्रथम किरण
सौ-सौ निर्दोष छटाओं से भरपूर कोई दरपन आया
मुझे याद अपना बचपन आया !

तुझे तकते नैन सजग मेरे
वो डगमग-डगमग पग मेरे
हे मात ! याद आँचल में तेरे सौ सावन का सिंचन आया !
मुझे याद अपना बचपन आया !

मुझे याद कोई करता होगा !

सपनों में रंग भरे प्यारे
नैनों में आस लिये, द्वारे;
घर की चौकट पे साँझ ढले चुप-चुप आहें भरता होगा
मुझे याद कोई करता होगा !

सखियों की बातें सुन-सुन के
'सोचेंगे क्या गुल आँगन के ?'
दाँतों में होंठ दबाकर के पलकें नीची करता होगा
मुझे याद कोई करता होगा !

धीरज को छोड़ दिया होगा
आईना फोड़ दिया होगा;
कोयल की केका सुनकर मन धीरज फिर से धरता होगा
मुझे याद कोई करता होगा !

एक गीत अधूरा रहा मेरा,
यूं गाते-गाते उमर गई

किसको समझाऊं बोल मेरे
साथी हैं बड़े अबोल मेरे !
कब हँसने की फ़ुर्सत पाई
बस रोते-रोते गुज़र गई—एक गीत.....

पिछले जनमों की हो करनी
या क़िस्मत ही हो बुरी अपनी !
जब नैन उठे तो भर आये
फिर धीमे-धीमे नज़र गई—एक गीत.....

क्या सात सुरों में आयेगी !
हर जनम मुझे तड़पायेगी
जब छंद बँधी तो छूट गई
जब राग बँधी तो बिखर गई—एक गीत.....

हाँ तुम धीमे-धीमे गाना
अँखियों वही सिंगार किये,
अधिकार भरे मुस्काना ।

कहते-कहते कह जाना तुम
होठों में दबी वो कहानी,
पलकों पे लिखी कविता देखो
हो जाये कहीं न पुरानी;
यूं ही बनते-बनते बन जाना ।
.....अँखियों में.....

अपने मिलने की कोई घड़ी को
गीत बनाकर गाओ तुम,
नज़रों से कही जो बात उसे
इक राज़ बनाकर गाओ तुम;
हाए ! हौले-हौले शरमाना ।
.....अँखियों में.....

मैं आज हूँ, कल मर जाऊंगा ।
जब लोग जलाएं चिता मेरी
गा लेना इक कविता मेरी
सब आँखें नम कर जाऊंगा – मैं नाम अमर कर जाऊंगा
मैं आज हूँ, कल मर जाऊंगा

आँखों पर हैं उपकार तेरे
तुझसे ही कटे दिन चार मेरे
जिस जानिब हो तसवीर तेरी चेहरे को उधर कर जाऊंगा
मैं आज हूँ, कल मर जाऊंगा

अब देख ये राहें मुड़ती हैं –
कब टूटी साँसें जुड़ती हैं ?
लगता है तेरे आने से पहले ही सफ़र कर जाऊंगा
मैं आज हूँ, कल मर जाऊंगा ।

इक दीप जला – दीवाली है
करता है दूर अंधेरों को
घर–घर से दुःख के डेरों को
जो कुछ भी करता है दीपक आँगन का सो रखवाली है
इक दीप जला – दीवाली है

उजियारा ही उजियारा है –
यह दीपक मुझको प्यारा है
इस दीपक की क्या बात कहूँ – इसकी हर बात निराली है
इक दीप जला – दीवाली है

हो चिरजीव ये अग्नि–शिखा,
हो सदा अमर ये ज्योत, सखा !
मुझ–से भूले–भटकों को ये ही पथ दिखलाने वाली है
इक दीप जला – दीवाली है

माँझी क्या तेरा जीवन है !
छोटी-सी तख्ती पर सिमटा
नैया के पालों में बैठा
छोटे-से नाटक का जैसे सूना-सा मंचन है।

है जीवन – संकल्प अधूरा
जाने कब होगा ये पूरा
नित नवीन निस-दि. निज मन में नवयुग का चेतन है।

किसकी खातिर बना मुसाफिर
कोई तो मंज़िल हो आखिर
किसके घर तू रुका हुआ है किसका ये आँगन है।
माँझी क्या तेरा जीवन है !

चोट

तुम बहुत ही खूबसूरत हो मगर

मैं नहीं आशिक़ तुम्हारे रूप का
मैं तुम्हारे हुस्न का क़ाइल नहीं
लोग कहते हैं जिसे दीवानगी
उस बुलंदी की तरफ़ माइल नहीं

बेवफ़ाई के सुने कुछ वाक़ये
कुछ क़िस्म अपने सुना सकता हूं मैं
पर मुहब्बत कर नहीं सकता तुम्हें
हाँ, तुम्हारे बुत बना सकता हूं मैं

कट रही थी ज़िंदगी कुछ चैन से
बेवजह तुमने मुझे उलझा दिया
ढेर-सी तनहाइयां लाई हो तुम
फिर पुराने ज़ख्म को ताज़ा किया

घूंट अश्कों के पिये मैंने कई
और रोया हूं समंदर की तरह
कुछ खराबों की तरह जागा हूं मैं
और सोया हूं कभी घर की तरह

ग़ैर की नज़रों से जब देखा तुम्हें
यूं लगा मिट जाएगी ये दूरियां
ख़त्म ये ख़ामोशियां हो जाएंगी
और दिल हो जाएगा फिर शादमां।

तुम हक़ीक़त हो – मुबारक हो तुम्हें
मैं तो हूं शाइर – सरापा ख़्वाब हूं
इक ज़माने से बड़ा मायूस हूं
और सदियों से बहुत बेताब हूं

पर कहीं बदक़िस्मती का ही कोई
सर मेरे इस बार भी साया न हो
इससे पहले के तुम्हें अपना कहूं
तुम पराई हो, पराई ही रहो ॥

न जिसका हो कोई अंजाम, वो आग़ाज़ क्या होगे !
सितारे कुफ़्र की शब के किसी की आस क्या होंगे ?
मेरे क़ातिल, मुहब्बत क्या कहूं अपनी !
जनाज़ा जब उठे मेरा – तेरे अंदाज़ क्या होंगे !!

चिराग़ां जल गई लाखों की रौशन हो चली महफ़िल,
उठे जब सुर्ख़ वो प्याले सुहागन हो चली महफ़िल ॥
नज़ारे हो गये क़ाबिल जहां से भी नज़र गुज़री,
हवा में जब उड़ा पहलू बदामन हो चली महफ़िल ॥

मजबूर कर न तू मुझे पीने के वास्ते,
हैं आंसूओं के जाम कई पीने के वास्ते ॥
यारी ही ज़िंदगी है–तूफ़ां परस्त हूं मैं,
जीता हूं मैं 'हक़ीर' सफ़ीने के वास्ते ॥

जाने वाले से

मेरे साथी, मेरी मानो यहीं साहिल पे रहो

एक बस एक नज़र और देख लो इसको
और कह दो कि तुम्हें इस जगह से प्यार नहीं
और कह दो कि तुम्हें प्यार नहीं है हम से
इस किनारे से तुम्हें कोई सरोकार नहीं

कल तो तुम हिंद की तारीख़ याद करते थे
क्या तुम्हें मदरसे का कोई सबक़ याद नहीं ?
कल जहां खेलते थे आज उसी बस्ती की
क्या तुम्हें कोई शाम कोई शफ़क़ याद नहीं ?

ग़ैर के बाग़ खिले हैं तो ख़ुश रहो बेशक
पर न भूलो दयार एक हमारा भी है
न बनाओ कभी तहज़ीब को अपनी बेघर
साइबां है तो बहरहाल गुज़ारा भी है

सिर्फ़ दौलत के सहारे नहीं गुज़र सकती
लहू रगों से पुकारे तो तड़प जाते हैं
कुछ परायों की ग़ुलामी क़ुबूल करते हैं
वरन सब लोग वतन ही को लौट आते हैं

उजड़ी हवेलियों की, झोपड़ों की क़सम
फिर कभी छोड़ के जाने का ज़िक्र लाओगे
जाओ, कश्ती को किनारे से लगा दो जाकर
और मल्लाह से कह दो कि नहीं जाओगे ॥

पिघलती बर्फ़

तेरा चेहरा न जाने कौन-से चेहरे से मिलता है !
तुझे ले कर ज़ेहन क्यूं आज-कल मसरुफ़ रहता है ?

नज़र मिलती है जब तुझसे तो कोई याद आता है,
तेरे क़दमों की आहट से मेरा दिल चौंक जाता है।

सुलझती हैं, सुलझ कर फिर उलझती हैं मेरी आखें,
कभी कुछ भूल जाता हूं कभी कुछ याद आता है।

कभी तुझको मेहज़ नज़रों का धोखा मानता हू मैं,
यक़ीनन भूल बैठा हू, मगर पहचानता हूं मैं।

तेरी आवाज़ ये अलफ़ाज ये अंदाज़ ये लहजा —
तेरी हर बात को अच्छी तरह से जानता हूं मैं।

किसी की ज़ुल्फ़ की खुशबू हवाओं से नहीं जाती,
कि उन शहनाइयों की धुन फ़िज़ाओं से नहीं जाती।

मुसलसिल बिजलियां गिरती हैं उस दिन से मेरे दिल पर,
कोई हसरत, जो बाक़ी है, घटाओं से नहीं जाती।

कहीं पिछले जनम में ही सही, इक बार तो होगा,
मुझे लगता है इस दिल को किसी से प्यार तो होगा।

सनमख़ाना-ए-दुनिया में मेरा देखा हुआ शायद,
तेरे जैसा कोई चेहरा – कोई रुख़सार तो होगा।

मेरी औक़ात ही क्या है – मुहब्बत कर न पाऊगा,
तेरी नज़रों में भी इक दिन तमाशा बन न जाऊंगा।

ख़ुदा की है क़सम तुझको न जब तक मौत आएगी,
तुझे भी ख्वाब समझूंगा तुझे भी भूल जाऊंगा।

मेरी आंखों से कोई बर्फ़ की मूरत पिघलता है,
मुझे कुछ याद आता है कोई करवट बदलता है।

मेरी दीवानगी तुझको तरसती है ए दोशीज़ा,
तेरा चेहरा मेरी महबूब के चेहरे से मिलता है। ०००

मैं तो तसवीर हूं जहां वालो
मुझको देखो तो याद कर लेना
एक थी ~~मह~~ जो कभी तुमसे
प्यार ही प्यार किया करती थी।

—**हक़ीर**

जन्मस्थल	: वढवाण शहर, जिला सुरेन्द्रनगर (गुजरात)
जन्मतिथि	: 18 अक्टूबर, 1957
शिक्षा	: बी० कॉम० (ऑनर्स) बम्बई विश्वविद्यालय
विशेष	: A I R 65 बम्बई केन्द्र के हिन्दी कवि
अभिरुचि	: संगीत गायन-वादन, काव्य एवं नाटक लेखन, अभिनय, व्यायाम तथा ज्योतिष
सम्प्रति	: कृषि पुनर्वित्त और विकास निगम, बम्बई में सेवारत।